एक खासी उमत रूहन की, सो गिनती बारे हजार।
ए आरब तो अनगिनती, नहीं करोरों पार।। ११ ।।

मोमिनों की गिनती कुरान में बारह हजार लिखी है। अरब के मुसलमान तो संख्या में बेशुमार (अनगिनत) हैं।

एता भी न विचारहीं, होए खावंद बैठे सब।
फैल न देखें अपने, लिया मोमिनों का मरातब।। १२ ।।

वह इतना भी विचार नहीं करते और मोमिनों का दावा लेकर कुरान के मालिक बने बैठे हैं। अपने कर्मों को देखते नहीं हैं और मोमिनों का दावा लिए बैठे हैं।

सहूर न करें दिल से, कह्या नाजी फिरका एक।
और बहत्तर नारी कहे, पर पावें नहीं विवेक।। १३ ।।

दिल से सोचते भी नहीं हैं और कहते हैं कि हम नाजी फिरका हैं, पर कुरान में तो नाजी फिरका एक होगा, ऐसा जिकर आया है। और बहत्तर फिरके नारी (दोजखी) कहे हैं। उन्हें इसकी खबर नहीं है कि नारी कौन है और नाजी कौन है?

लिख्या है कुरान में, कुलफ किए दिल पर।
परदा कानों आंखों पर, तो न सके अर्थ कर।। १४ ।।

कुरान में लिखा है कि जाहिरी अर्थ लेने वालों के दिलों पर ताले लगे हैं, अर्थात् आंखों और कानों पर परदा पड़ा है, इसलिए वह बातूनी अर्थों तक नहीं पहुंच सके।

कागद एक उमत का, और हुआ झूठों सों छल।
माएने जब जाहेर भए, तब भाग्यो झूठों बल।। १५ ।।

कुरान केवल नाजी फिरके के वास्ते आया है। जब इसके छिपे भेदों का रहस्य जाहिर हो गया तो झूठे दावेदारों का दावा झूठा हो गया। झूठे दावेदार का कोई बल न रहा।

एह विध साख कुरान में, जाहेर लिखी हकीकत।
सो धनी आए जहूदों मिने, ओ आरबों में ढूंढ़त।। १६ ।।

इस तरह से कुरान में गवाही लिखी है कि पारब्रह्म तो हिन्दुओं में आ गये हैं, लेकिन अभी भी लोग अरब में उनके आने का इन्तजार कर रहे हैं।

परदा लिख्या मुंह पर, वास्ते आवने हिंदुओं माहें।
जाहेर परस्त जो आरब, सो इसारत समझत नाहें।। १७ ।।

खुदा के मुंह पर परदा होगा। इसका मतलब है कि वह हिन्दुओं में आएंगे, किन्तु जाहिरी अर्थ करने वाले इसका भेद नहीं समझते।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ७७२ ।।

कुरान के निसान कयामत के जाहेर हुए

बरस नब्बे हजार पर, गुजरे एते दिन।
कयामत लिखी कुरान में, सो ए न पाई किन।। १ ।।

रसूल साहब के जाने के बाद एक हजार नब्बे वर्ष (सम्वत् १७३५) बीतेंगे, कुरान में लिखा है तब कयामत होगी। इस संकेत को कोई समझ नहीं सका।

Nijanand App

कई पढ़ पढ़ काजी हुए, कई आलम आरिफ।
माएने मगज मुसाफ के, किन खोल्या ना एक हरफ।। २ ।।

कई कुरान को पढ़-पढ़कर काजी और कई ज्ञानी (विद्वान) बन गए, परन्तु कुरान के छिपे भेदों के रहस्यों में से एक को भी नहीं खोला।

लिख्या जाहेर कुरान में, और माजजे सब रद।
सांचा माजजा इमाम पे, जो ले उतरया अहमद।। ३ ।।

कुरान में स्पष्ट लिखा है कि सभी चमत्कार रद्द हो जाएंगे। सच्चा चमत्कार यह होगा कि रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी, श्री देवचन्द्रजी) तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर उतरेंगे और इमाम मेंहदी को सौंपेंगे।

करामात कलाम अल्लाह की, सांची कहियत हैं सोए।
लिख्या है कुरान में, सो बिना इमाम न होए।। ४ ।।

कुरान में लिखे चमत्कार सत कहे जाते हैं। कुरान में यह भी लिखा है कि कुरान के छिपे भेदों को इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथजी के बिना कोई खोल नहीं सकेगा।

पढ़या नाहीं फारसी, ना कछू हरफ आरब।
सुन्या न कान कुरान को, और खोलत माएने सब।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने फारसी को नहीं पढ़ा और न अरबी को ही पढ़ा है। कुरान को सुना तक नहीं है और उसके सब छिपे भेदों के रहस्यों को मैंने खोल दिया है, अर्थात् श्री प्राणनाथजी ही इमाम मेंहदी हैं।

ए सब किताबें इन पे, तामें किल्ली कुरान।
रूह अल्ला महंमद मेंहेदी, एही इमाम पेहेचान।। ६ ।।

सब धर्मग्रन्थों का ज्ञान श्री प्राणनाथजी के पास है और कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने की कुंजी है। रूह अल्लाह मुहम्मद मेंहदी इन्हीं के अन्दर विराजमान हैं। यही इनकी पहचान है।

जो लों माएने मगज न पाइया, तो लों पढ़या न किन कुरान।
किन भेज्या किन वास्ते, ना कछू रसूल पेहेचान।। ७ ।।

जब तक कुरान के छिपे भेदों को नहीं समझा जाए तब तक यही समझना चाहिए मैंने कुरान पढ़ा ही नहीं, क्योंकि तब तक यह जाना नहीं जा सकता कि इस कुरान को भेजने वाले कौन हैं और यह किसके वास्ते भेजा गया है तथा रसूल साहब का वास्तविक स्वरूप क्या है?

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो कहे देव सैतान।
यों जंजीरां मुसाफ की, कई विध करी बयान।। ८ ।।

जो कुरान के ऊपर के अर्थों को लेते हैं वही पढ़े-लिखे शैतान हैं। इस तरह कुरान की जब आयतों की कड़ियों को मिलाकर कई तरह से उनके अर्थ खोल दिए।

अजाजील दम सबन में, फरिस्ता जो बुजरक।
सारी जिमी पर सिजदा, किया ऊपर हक।। ९ ।।

अजाजील फरिश्ता जो सबसे बड़ा फरिश्ता है और सबके अन्दर बैठा है, उसने सारी जमीन पर खुदा के लिए सिजदा किया यह किस्सिसुल अंबिया कुरान शरीफ में लिखा है।

Nijanand App

हुकम हुआ तिन को, कर सिजदा आदम पर।
माएने मगज न ले सके, लिया ऊपर का जाहेर।। १० ।।

उसी अजाजील को खुदा का हुकम हुआ कि आदम के ऊपर सिजदा कर। उस अजाजील ने आदम के अन्दर पारब्रह्म की रूह है, इस भेद को नहीं समझा और इसलिए जाहिरी रूप से पहचान न कर सका और सिजदा नहीं किया, अर्थात् विष्णु भगवान सबके अन्दर बैठे हैं, इसलिए दुनियां वाले श्री प्राणनाथजी को एक मनुष्य तन में होने के कारण पहचान नहीं सके।

लानत हुई तिन को, हुआ गले में तौक।
यों सब जाहेर पुकारहीं, तो भी छोड़ें ना वे लोक।। ११ ।।

इस कारण से अजाजील को लानत लगी (फटकार लगी) और गले में लानत का फंदा पड़ गया। यह सभी लोग स्पष्ट कहते हैं और खुद उस रास्ते को नहीं छोड़ते।

तिन दिया धक्का आदम को, अबलीस गेहूं खिलाए।
काढया प्यारी भिस्त से, दुस्मन संग लगाए।। १२ ।।

इसी अजाजील फरिश्ते के मन अबलीस ने (विष्णु भगवान के मन स्वरूप नारद ने) बाबा आदम को धोखे से गेहूं खिलाकर बहिश्त से बाहर निकलवा दिया और साथ में अबलीस को आदम की औलाद के अन्दर बिठा दिया।

ए विचारे क्या करें, सब आदम की नसल।
तो फुरमाया ना करें, वे खैंचे पेड़ असल।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यह सब आदम की नस्ल है। मन के अन्दर अबलीस बैठा है जो खुदाई आदेश का पालन नहीं करने देता और संसार की तरफ उनकी अकल को मोड़ देता है। यह बिचारे क्या करें?

ओ तो ले ले माएने मगज, लिखे बड़े निसान।
सो ए धरे सरत पर, करने अपनी पेहेचान।। १४ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में बड़े-बड़े निशान इशारतों में लिखा है और उनमें पारब्रह्म के आने का समय भी लिखा है जिससे छिपे भेदों के रहस्य खुल जाने से दुनियां को इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के आने की पहचान हो जाए।

दुनियां सबे जाहेरी, सो लेवे माएनें जाहेर।
अंदर अर्थ खुले बिना, क्यों पावे दिन आखिर।। १५ ।।

जाहिरी दुनियां के सभी लोगों की बाहरी नजर है, इसलिए सब अपने धर्म-ग्रन्थों के मायने जाहिरी लेते हैं। जब तक अन्दर के भेदों का पता नहीं चलेगा तब तक कयामत का दिन कैसे निश्चित करेंगे।

निसान कहे इन वास्ते, सो बांधें कौल पर हद।
लेत माएने ऊपर के, सो करने को सब रद।। १६ ।।

कयामत के समय को निश्चित करने के लिए ही कयामत के सात बड़े निशान लिखे हैं। इनके यह लोग जाहिरी अर्थ लेते हैं और उन रहस्य भरी बातों को झूठा कर रहे हैं।

Nijanand App

कलाम अल्ला के माएने, सो भी कही इसारत।
ए नसल आदम हवाई, क्यों पावे दिन आखिरत।। १७ ।।

कुरान में अल्लाह के वचन हैं और वह भी इशारतों में लिखे हैं। यह दुनियां के मुसलमान निराकार से पैदा आदम (सफी उल्लाह) की औलाद हैं, इसलिए इन निशानों में कयामत के जाहिर होने के छिपे भेद कैसे समझें?

माएने मुल्लां या ब्राह्मण, करते जो उलटाए।
सोई हरफ जबराईल, गया सब चटाए।। १८ ।।

धर्मग्रन्थों के अर्थ मौलवी और ब्राह्मण लोग मनमाने और उल्टे करते थे। अब जबराईल फरिश्ते ने जाहिरी अर्थ को समाप्त कर दिया और सच्चे छिपे अर्थ को जाहिर कर दिया।

नेहेरें चलसी उलटी, किए नजीकी दूर।
ईसा मेंहेदी महंमद, आए हिन्द में बरस्या नूर।। १९ ।।

कुरान में लिखा है कि कयामत के समय नहरें उलटी चलेंगी, अर्थात् यह पण्डित, मुल्ला, काजी सब जो अपने को खुदा का नजदीकी कहते हैं वह उलटे अर्थ करने के कारण खुदा के नजदीक होने का दावा लेते हैं वह सब दूर हो जाएंगे। ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) मुहम्मद मेंहदी श्री प्राणनाथजी जब हिन्द में आए तो उनकी जागृत बुद्धि तारतम वाणी से ज्ञान की वर्षा हुई।

नूर खुदा रोसन हुआ, खैंच छूटी सब तरफ।
लेत माएने ऊपर के, सो रह्या न कोई हरफ।। २० ।।

अब खुदा (पारब्रह्म) के स्वरूप की पहचान हुई तो सभी के बड़प्पन की खींचतान का झगड़ा समाप्त हो गया। हकीकत के मायने जाहिर होते ही ऊपर के झूठे मायने करने वालों का कोई महत्व न रहा।

महंमद आया ईसे मिने, तब अहमद हुआ स्याम।
अहमद मिल्या मेंहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम।। २१ ।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के तन में श्यामजी के मन्दिर में श्री राजजी महाराज रास वाले स्वरूप में विराजमान हुए तो श्री श्यामाजी श्याम कहलाए। अब यह युगल स्वरूप श्री इन्द्रावतीजी के तन में हवसा में विराजमान हुए और वहां से जब मेड़ता पधारे तो वहां मुहम्मद साहब की शक्ति भी अन्दर आने से वह युगल स्वरूप श्याम अहमद कहलाए। फिर दिल्ली से अनूपशहर जाते समय श्री राजजी महाराज का आवेश मेंहदी स्वरूप विरह तामस में अन्दर आया तो वह अहमद इमाम मेंहदी के रूप में प्रगट हुए (अहमद अर्थात् पूर्ण स्वरूप)।

अल्लफ कह्या महंमद को, रूह अल्ला ईसा लाम।
मीम मेंहेदी पाक सें, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम।। २२ ।।

हरफ मुक्तआत में कुरान के शुरू में अलिफ, लाम, मीम शब्द लिखे हैं जिनको हरफे मुक्तआत (छिपे भेद वाला) कहा है। इनके छिपे भेदों का रहस्य खुदा ही खोलेंगे। वह अब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने उनके अर्थ जाहिर कर दिए। अलिफ का अर्थ मुहम्मद साहब है। लाम का अर्थ ईसा रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) है। मीम इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) के लिए कहा है। कुरान कहता है यह तीनों स्वरूप एक हैं।

Nijanand App

महंमद ईसा आए मेयराज में, और असराफील इमाम।
बुध जबराईल मिल के, किए गुझ जाहेर अल्ला कलाम।। २३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के तन में हवसा में दर्शन देने के समय ईसा रूह अल्लाह की शक्तियां श्री राजजी और श्यामाजी के अन्दर विराजमान हुईं। मुहम्मद और जबराईल यह दोनों मेड़ते में अन्दर आकर बैठे। अनूपशहर जाते समय असराफील फरिश्ता श्री इन्द्रावतीजी के तन में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के नाम से जाहिर हुए और उन्होंने कुरान के छिपे रहस्यों को जाहिर किया।

माएने इन मुसाफ के, कलाम अल्ला का कौल।
ईसे के इलम से, दई इसारतें सब खोल।। २४ ।।

इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को तथा अल्लाह के वक्त-ए-आखिरत को आने के वायदे की सभी इशारतें जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से खोल दिए।

बड़े निसान आखिरत के, आजूज माजूज दोए।
बेटे कहे याफिस के, इनहूं न छोड़या कोए।। २५ ।।

कयामत के बड़े निशानों में आजूज-माजूज का जिक्र है। यह नूह पैगम्बर के बेटे याफिस (विष्णु) के बेटे हैं। इन दोनों (दिन और रात) ने सबकी आयु को समाप्त कर दिया।

कहे बड़े सबन से, सौ गज का आजूज।
और तंग चसम कह्या, एक गज का माजूज।। २६ ।।

कुरान में आजूज को सबसे बड़ा सौ गज का कहा है, अर्थात् दिन के समय इन्सान का मन सौ तरफ दौड़ता है और माजूज को एक गज का कहा है तथा तंग चश्म (दूर तक न देखने) वाला कहा है। यह रात्रि है जिसमें मनुष्य एक ही तरफ हो जाता है।

चार लाख कौम इन की, फौजां होसी तीन।
अर्थ ऊपर के आखिरत, क्यों पावें रात दिन।। २७ ।।

इन दिन और रात (आजूज और माजूज) की चार लाख कौम (चार लाख दिन और रात) और तीन फौजें—तुलुअ, ताबां और साबा, अर्थात् सुबह, दोपहर और शाम कही हैं। जाहिरी अर्थ लेने से यह आजूज-माजूज का पता नहीं चलता कि यही दिन और रात हैं।

ए तो गिनती कही दिनन की, आखिरत बड़े निसान।
माएने मगज मुसाफ के, और करे सो कौन बयान।। २८ ।।

आखिरत के निशानों में यह चार लाख दिनों की गिनती है जो मुहम्मद साहब के जाने के बाद सम्वत् १७३५ तक पूरी होती है। कुरान के छिपे इस तरह के भेदों को दूसरा कौन जाहिर कर सकता है?

काल याही दिन कहे, सो पोहोंचे कौल पर आए।
तब पिंड या ब्रह्मांड, देत सबे उड़ाए।। २९ ।।

वह समय और दिन जिसमें इमाम मेंहदी के जाहिर होने का वायदा है वह आ गए। अब यह आजूज और माजूज (दिन और रात) हर इन्सान के आठ तत्वों के तन (पांच तत्व और तीन गुण) तथा ब्रह्माण्ड को नष्ट कर देंगे।

Nijanand App

दाभ-तूल-अर्ज मक्के से, जाहेर होसी सब ठौर।
एक हाथ आसा मूसे का, दूजे सलेमान की मोहोर।। ३० ।।

मक्का से प्रगट होने वाले पशु वृत्ति वाले मनुष्यों के संसार में होने की बात कही है। वह न्याय के दिन जाहिर होंगे। न्याय के दिन न्यायाधीश श्री प्राणनाथजी के एक हाथ में मूसे की लाठी और दूसरे हाथ में सुलेमान पैगंबर की मोहर होगी।

सो मुख होसी उजला, मोहोर करसी जिन।
आसा चुभावे जिन मुख, स्याह मुख होसी तिन।। ३१ ।।

न्याय के सभय मोहर लगाने से उनके मुख उज्ज्वल हो जाएंगे। जो पारब्रह्म की पहचान कर चले हैं वह उज्ज्वल मुंह वाले होंगे। मूसा पैगम्बर की लाठी लगाने से जिसका मुंह काला हो जाएगा, अर्थात् काफिरों के मुख काले हो जाएंगे।

उज्जल मुख मोमिन कहे, स्याह मुख कहे काफर।
या भिस्ती या दोजखी, जाहेर होसी आखिर।। ३२ ।।

इसलिए मोमिनों को उज्ज्वल मुंह वाला कहा गया है और इन्हें अखण्ड सुख मिलेगा। काफिरों के मुंह काले होंगे उनको दोजख (नरक) मिलेगा, ऐसा कुरान में लिखा है।

कही दाभा वास्ते वह जिमी, पेहेले हुती सबे कुफरान।
जोलों स्याम बरारब ना हतें, ना रसूल खबर फुरमान।। ३३ ।।

अरब की जमीन पर पहले सभी जानवरों की भांति रहते थे और सब काफिर का काम करते थे। जब तक रसूल मुहम्मद वहां पर प्रकट नहीं हुए तब तक किसी को खुदाई आदेश नहीं मिला।

जब स्याम रसूल आए इन जिमी, तब हुआ नूर रोसन।
कुरान रसूल उमत, जाहेर करी सबन।। ३४ ।।

जब रास की लीला के बाद श्री कृष्ण मुहम्मद बनकर आए तो उनकी वाणी का ज्ञान फैला और तब रसूल साहब ने वहां के लोगों को कुरान के और उम्मत के आने के बारे में बताया।

ल्याए बंदगी केहेलाए कलमा, बरस्या खुदा का नूर।
सो नूर फिरया खाली भई, जैसी असल दाभा थी अंकूर।। ३५ ।।

रसूल साहब ने खुदा का कलमा पढ़ाकर खुदा की बन्दगी कराई और खुदा के ज्ञान को जाहिर किया। जब रसूल साहब चले गए तो एक हजार नब्बे वर्ष तक कुरान की वाणी की शक्ति वहां रही और इमाम मेंहदी साहब के जाहिर होने पर मक्का से सब शक्तियां उठकर इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के अन्दर आ गईं और अरब पर फिर काफिरों का जैसा रसूल साहब के आने से पहले था, वैसा ही जोर हो गया।

सो नूर सब इत आइया, इन जिमी मसरक।
तब वह जिमी दाभा भई, जैसी पेहेले थी बिना हक।। ३६ ।।

यह सब कुरान का ज्ञान पूर्व में हिन्दुस्तान में हिन्दुओं में इमाम मेंहदी के तन में आ गया और मक्का की हालत रसूल साहब से पहले जैसी थी वैसी हो गई।

Nijanand App

मोमिन मुख उज्जल भए, भए काफर मुख स्याह।
यों मसरक और मगरब, दोनों दुरस्त कह्या।। ३७ ।।

कुरान में मोमिनों के मुख उज्ज्वल और काफिरों के मुख काले होने का जो इशारा है वही अब पूरब दिशा हिन्दुओं में और पच्छिम दिशा मुसलमानों में जाहिर हो गया। जो कुछ कुरान में लिखा था वह हो गया।

रूह अल्ला महंमद इमाम, मसरक आए जब।
सूरज गुलबा आखिरी, मगरब ऊग्या तब।। ३८ ।।

रूह अल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) मुहम्मद रसूल और इमाम मेंहदी जब पूरब में हिन्दुओं के तन में श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर हुए तो इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने से पहले जो ज्ञान का सूर्य मुसलमानों में था तब तक अरब की दिशा पूरब कही गई, क्योंकि खुदाई ज्ञान वहां आया और अब इमाम मेंहदी के हिन्दुओं में जाहिर होने पर वह ज्ञान हिन्द में आ जाने से हिन्द में हिन्दुओं की दिशा पूरब की हो गई और अरब में मक्का मगरिब (पच्छिम) दिशा बन गई और वहां अंधेरा हो गया।

नूर खुदा आया मसरक, ऊग्या सूरज मगरब।
जाहेरी ढूंढे सूरज जाहेर, ए जो पढ़े आखिरी सब।। ३९ ।।

जब इमाम मेंहदी तारतम वाणी के साथ हिन्दुओं में आए तब मुसलमानों में अज्ञान का अन्धकार फैला। पढ़े-लिखे लोग जाहिरी सूर्य को मगरिब (पच्छिम) में उदय होने का रास्ता देखते रहेंगे।

ज्यादा चौदे तबक से, दज्जाल गधा इन हद।
काना अस्वार तिन पर, सो भी वाही कद।। ४० ।।

चौदह तबकों से बड़ा दज्जाल का गधा होगा, ऐसा वर्णन है। उसके ऊपर उसी ऊंचाई का एक काना दज्जाल सवार होगा।

ताए रूहअल्ला मारसी, करसी दुनियां साफ।
आखिर उमत महंमदी, करसी आए इंसाफ।। ४१ ।।

और उस दज्जाल को रूह अल्लाह दूसरे जामे में बैठकर मारेंगे और संसार को उसकी गुलामी से मुक्त करेंगे और फिर अन्त में इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी महाराज तथा उनकी जमात सुन्दरसाथजी सारी दुनियां का न्याय करेंगे।

दम दज्जाल सबन में, रहत दुनी दिल पर।
ए जो पातसाह अबलीस, करत सबों में पसर।। ४२ ।।

दज्जाल का मन अबलीस (नारद) सबके दिलों पर बादशाह बना बैठा है। यह बात भी जाहिर हो गई।

ऐसा ए जानत हैं, तो भी जाहेर चाहें दज्जाल।
जब ए दज्जाल मारिया, तब दुनी रेहेसी किन हाल।। ४३ ।।

इस हकीकत को पढ़े-लिखे मुसलमान जानते हैं फिर भी दज्जाल को जाहिरी रूप से ढूंढ़ते हैं। जब रूह अल्लाह इस दज्जाल को मारकर गिरा देंगे तो इतनी बड़ी लाश कहां गिरेगी और दुनियां का क्या हाल होगा, यह विचार नहीं करते।

Nijanand App

आखिर आए असराफील, उड़ावसी बजाए सूर।
फेर करसी कायम, बजाए खुदाए का नूर।। ४४ ।।

आखिर में असराफील (जागृत बुद्धि का फरिश्ता) जागृत बुद्धि के ज्ञान का सूर फूंकेगा तो बड़े-बड़े पहाड़ के समान धर्माचार्य ज्ञानियों के झूठे ज्ञान के अहंकार टूट जाएंगे और फिर दूसरा सूर फूंकने से पारब्रह्म के दर्शन कराकर सबको बहिश्तों में अखण्ड करेंगे।

गावेगा कुरान को, असराफील सूर कर।
तब फिरसी सब फरिस्ते, एह बात चित्त धर।। ४५ ।।

असराफील फरिश्ता जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार को मिटाकर ज्ञान का उजाला करेगा तब सब देवी-देवता योगमाया की अव्याकृत की बहिश्त में जाएंगे।

जब जहूर जाहेर हुआ, कलाम अल्ला का नूर।
तब ए होसी कायम, ले याही का जहूर।। ४६ ।।

जब तारतम वाणी से छिपे भेदों का रहस्य फैलेगा तब सारी दुनियां को जानकारी मिल जाएगी और फिर वह सब अखण्ड सुख को प्राप्त करेंगे।

ए जो माएने मुसाफ के, सो मेंहेदी बिना न होए।
सो साहेब ने ऐसा लिख्या, और क्यों कर सके कोए।। ४७ ।।

कुरान और सब धर्मग्रन्थों के छिपे भेदों के रहस्य इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई नहीं खोल सकता, ऐसा कुरान में जब स्वयं पारब्रह्म ने लिखवा दिया तो फिर दूसरा कोई कैसे खोल सकता है?

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ८१९ ।।

सूरत मीजान की

केहेती हों उमत को, सुनसी सब संसार।
मकसूद तिन का होएसी, जो लेसी एह विचार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते कहती हूं जिसे सारा संसार सुनेगा। पर लाभ उसी को ही होगा जो सुनकर इसे विचारेगा।

फिरके सबों ने यों कह्या, ए जो दुनियां चौदे तबक।
ढूंढ़ ढूंढ़ के हम थके, पर पाया नाहीं हक।। २ ।।

सभी धर्मग्रन्थों ने कहा कि चौदह लोकों के देवी-देवता और ज्ञानी लोग सभी पारब्रह्म को ढूंढ़कर थक गए, परन्तु पारब्रह्म किसी को नहीं मिला।

वेद कतेब पढ़ पढ़ थके, केहे केहे थके इलम।
कह्या तिनों मुख अपने, ठौर कायम न पाया हम।। ३ ।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर लोग थक गए। ज्ञान की चर्चा करके थक गए। उन्होंने भी अपने मुख से स्पष्ट कहा कि निराकार के पार बेहद अखण्ड भूमि का पता नहीं लगा।

मेहेर करी मोहे मेहेबूबें, रूह अल्ला मिले मुझ।
खोल दिए पट अर्स के, जो बका ठौर थी गुझ।। ४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर धाम-धनी ने कृपा की जिससे श्यामाजी मुझे मिले और तारतम वाणी से अखण्ड परमधाम तक के दरवाजे खोल दिए जो आज तक छिपे थे।

Nijanand App